आदि महोत्सव 2024 : मध्य प्रदेश की संस्कृति और विरासत से रूबरू करा रहे 35 स्टॉल

By ETV Bharat Delhi Desk
Published : Feb 12, 2024, 5:47 PM IST
5 Min Read

Aadi Mahotsav 2024: दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में आदि महोत्सव चल रहा है. आदि महोत्सव में मध्य प्रदेश की संस्कृति, विरासत, कलाकृति से लोगों को अवगत कराने के लिए 35 स्टॉल लगाए गए हैं.

नई दिल्ली: दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में 10 फरवरी से 18 फरवरी तक आदि महोत्सव चल रहा है. आदि महोत्सव में देश भर के अलग-अलग राज्यों से आदिवासी क्षेत्रों की स्टॉल्स लगाई गई हैं. वहीं, इस बार आदि महोत्सव में अकेले मध्य प्रदेश के 35 स्टॉल लगाए गए हैं. ताकि लोगों को महोत्सव में मध्य प्रदेश की संस्कृति, विरासत, कलाकृति, कला पेंटिंग्स को जानने का मौका मिले.

मध्य प्रदेश के क्षेत्रीय प्रबंधक अजीत कुमार भगत ने बताया कि हर वर्ष भारत सरकार की तरफ से आदि महोत्सव का अयोजन किया जाता है. ट्राइबल इंडिया के तत्वाधान में यह सब हो रहा है. यह आदि महोत्सव देश के अलग अलग राज्यों के आदिवासी कल्चर को बढ़ावा देने के मकसद से किया जाता है. इस बार एमपी की 35 स्टॉल लगी है. इसके साथ ही मध्य प्रदेश की गोंड पेंटिंग, चंदेरी सिल्क, महेश्वर सिल्क और बाघ सिल्क की स्टॉल लगी हुई है. मध्य प्रदेश की आदिवासी क्षेत्र जनजातीय समुदाय जमीन से जुड़े हुए हैं. सरकार आदिवासी क्षेत्र के लोगों को बढ़ावा देने के लिए यह काम कर रही है.

महाभारत काल से चंदेरी साड़ी जुड़ाव: मध्यप्रदेश का चंदेरी सिल्क और यहां की साड़ियां भारत के साथ-साथ विदेश में भी फेमस हैं. चंदेरी फेब्रिक और डिजाइन अपने आप में अनूठे हैं. बॉलीवुड से लेकर आम महिलाएं चंदेरी की साड़ियां अपने कलेक्शन में जरूर रखना चाहती है. चंदेरी के सूट, चंदेरी के कपड़े और सबसे ज्यादा फेमस हैं चंदेरी की साड़ियां. आज आपको चंदेरी साड़ियों की खासियत के बारे में बताते हैं इसका रोचक इतिहास भगवान कृष्ण के वक्त से जुड़ा है. चंदेरी का इतिहास बहुत गौरवशाली है. इस शहर का जिक्र महाभारत में भी किया गया है. कहा जाता है कि वैदिक युग में भगवान श्रीकृष्ण की बुआ के बेटे शिशुपाल ने इसकी खोज की थी. 11वीं शताब्दी में प्रमुख व्यापारिक मार्ग यहीं से होकर गुजरता था. यहां विख्यात संगीतकार बैजू बावरा की कब्र और कई एतिहासिक इमारतें हैं.

बाग साड़ी की जानिए खासियत: प्रदेश के बाग शहर में कुशल कार्यबल द्वारा प्रचलित, बाग प्रिंटिंग प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके की जाती है, जो फलों और फूलों के अर्क से निकाले जाते हैं. प्रसिद्ध बाग कारीगर उमर खत्री के अनुसार, बाग प्रिंट प्रकृति, वन्य जीवन और विरासत से प्रेरित हैं. आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले ब्लॉक रूपांकनों में गेंदा (गेंदा फूल), नारियल जाल (ताजमहल से प्रेरित) आदि हैं. बाग प्रिंटिंग न केवल कपास बल्कि रेशम, माहेश्वरी, चंदेरी और शिफॉन को भी सुशोभित करती है. बाग प्रिंटेड कॉटन अपने हल्के वजन और जैविक एहसास के कारण गर्मियों में पहने जाने वाले सबसे लोकप्रिय कपड़ों में से एक है.

माहेश्वरी सिल्क साड़ी देश ही नहीं विदेशों में भी फेमस: माहेश्वरी हथकरघा कपड़ों की उत्पत्ति का पता 5वीं शताब्दी में मालवा की राजधानी, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और ऐतिहासिक शहर माहेश्वर, जिला खरगोन, मध्य प्रदेश में लगाया जा सकता है. इंदौर का शाही परिवार, होलकर, पारंपरिक के मुख्य संरक्षक रहे हैं. सुरुचिपूर्ण माहेश्वरी साड़ियाँ, मुख्य रूप से मालवा शाही दरबार की महिलाओं द्वारा पहनी जाती हैं. माहेश्वरी साड़ियाँ लकड़ी के करघे का उपयोग करके बुनी जाती हैं और पारंपरिक रूप से वनस्पति रंगों का उपयोग करके रंगी जाती है. माहेश्वरी साड़ियों के लोकप्रिय रंगों में अंगूरी, अंगूर हरा, गहरा गुलाबी, मजेंटा, कासनी हल्का बैंगनी बैंगनी, हरा, मोर नीला, आम्रक, टैपकीरी आदि है. पारंपरिक माहेश्वरी साड़ियों के पल्लू में पांच बारी-बारी से धारियां होती हैं, जिनमें से तीन अलग-अलग रंगों की होती हैं, लेकिन दो हमेशा सफेद होती हैं.

- **ये भी पढ़ें:** तीन महीने की मेहनत से तैयार हुआ एकल नाटक, प्रस्तुति ने मोह लिया दर्शकों का मन

गोंड पेंटिंग में दिखती है आदिवासी झलक: मध्यप्रदेश के मण्डल जिले की प्रसिद्ध जनजातियों में से एक 'गोंड' द्वारा बानायी गयी चित्र कला की विशिष्ट कलाशैली को गोंड चित्रकला के नाम से जाना जाता है. लम्बाई और चौड़ाई केवल इन दो आयामों वाली ये कलाकृतियाँ खुले हाथ बनायी जाती हैं जो इनका जीवन दर्शन प्रदर्शित करती हैं. गहराई, जो किसी भी चित्र का तीसरा आयाम मानी गई है, हर लोककला शैली की तरह इसमें भी सदा लुप्त रहती है, जो लोक कलाओं के कलाकारों की सादगी और सरलता की परिचायक है, गोंड कलाकृतियाँ इस जनजाति के स्वभाव और रहन सहन की खुली किताब हैं, इनसे गोंड प्रजाति के रहन सहन और स्वभाव का अच्छा परिचय मिलता है, तभी तो ये कलाकृतियाँ यह बताती हैं कि कलाकारों की कल्पना कितनी रंगीन हो सकती है.

- **ये भी पढ़ें:** नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024: जानिए थीम से लेकर टाइमिंग तक की पूरी डिटेल्स